IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

वर्ण संकर जातियों के संसर्गसे उत्पन्न अन्त्यजः एक संक्षिप्त अध्ययन

Umesh Kumar*[1] S. K. Vashishth *[2]

1.Research Scholar, Department of History, NIILM University, Kaithal, Haryana

2 Professor, Department of History, NIILM University, Kaithal, Haryana

सारांश:

अन्त्यज शब्द का अर्थ भारत में व्यक्तियों के एक ऐसे वर्ग है, जिसे सामान्यत: जाति से बाहर तथा अछूत माना जाता है। यह एक प्राचीन और सबसे अधिक शोषित जाति है। इसे श्मशान पाल, डोम, अंतवासी, थाप, श्मशान कर्मी, अंत्यज, चांडालनी, पुक्कश, गवाशन, दीवाकीर्ति, मातंग, श्वपच आदि नामों से भी पुकारा जाता है वह व्यक्ति जो अंतिम वर्ण में उत्पन्न हुआ हो । वह शुद्र जो प्राचीन युग में छुने के योग्य नहीं माना जाता था या जिसका छुआ हुआ जल द्विज उन दिनों ग्रहण नहीं करते थे प्राचीन विधि संहिता "मनु स्मृति" के अनुसार, इस वर्ग का उदय एक ब्राह्मण महिला और एक शूद्र पुरुष के मिलाप से हुआ था। कुछ विद्वानों का मत है कि नामशूद्र की उत्पत्ति बिहार की राजमहल पहाड़ियों में निवास करने वाली एक आदिम जनजाति से हुई है। इस शोध पत्र में अन्त्यज जाति की उत्पत्ति के विषय में प्रकाश डाला जाएगा।

मुख्य शब्द : अन्त्यज, जाति, जाति, वर्ण संकार, शब्दकोष

अन्त्यज का अर्थ मुख्य रूप से अन्त में, नीच या निम्न जाति का मानव या चाण्डाल आदि माना जाता है. भिन्न-भिन्न शब्द कोषों में अन्त्यज का अलग-2 अर्थ बताया गया है . आप्टे शिवराम वामन के संस्कृत-हिन्दी शब्दकोष के अनुसार अन्त्यज का अर्थ अन्त में या आदिम जाति का मनुष्य या म्लेच्छ या सात नीच जातियों से एक चाण्डाल है। [1] मध्यकालीन विद्वान हलायुद्ध के शब्दकोश के अनुसार अन्त्यज का अर्थ चांडाल या जो अन्त में हो है[2]हिन्दी शब्दकोष के अनुसार अन्त्यज का अर्थ शूद्र या चाण्डाल है [3]

वर्ण संकार जातियों के मेल से उत्पन्न हुए अन्त्यजों के अन्तर्गत ऐसे वर्ण संकर जातियों अर्थात अन्त्यजो को रखा गया हैं जो वर्ण संकर पुरुष व वर्णसंकर स्त्री के संसर्ग से जन्मे हुए है . वो निम्न प्रकार से हैं -

1. आन्ध्रः -

इन अन्त्यजो का सबसे पहले वर्णन ऐतरेय ब्राह्मण में आया है [4] इस ब्राह्मण के अनुसार विश्वामित्र ने 50 पुत्रों को, जब वे शुन शेप को अपना भाई मानने को तैयार नहीं हुए, तब उनको श्राप दिया कि वे आन्ध्र, पुन्द्र, शबर, पुलिन्द, मूषित हो जाये।

ये जातियाँ समाज में निम्नतम स्थान रखती थी। मनु स्मृति व मत्स्य पुराण के अनुसार वैदेहक पिता व निषाद माता से उत्पन्न सन्तान आन्ध्र कहलाती थी [5]महाराजा अशोक के एक शिलालेख (प्रस्तर अनुशासन 13) में आंध्र लोग पुलिन्दों से संबंधित माने गए हैं। उद्योग पर्व के अनुसार आन्ध्र (सम्भवता आन्ध्रदेश के निवासी) द्रविणों एवं नांच्यों के साथ उल्लिखित हैं। राजा देवपाल के नालन्दा पत्र में मेद, अन्द्रक एवं चाण्डाल को निम्नतम जातियों में गिना गया है।

2. मैत्रेयक -

मनु के अनुसार बैदेहक पुरुष एवं आयोगव स्त्री के मेल से उत्पन्न संतति हैं। इसकी जीविका राजों एवं सम्पन्न लोगों की स्तुति करना एवं प्रातः काल घन्टी बजाना है[6]

3. कारावर (चर्मकार)-

कारावर अन्त्यज की उत्पत्ति के बारे में महत्पूर्व सूचना मनुस्मृति में मिलती हैं। मनुस्मृति के अनुसार यह निषाद जाति के पुरुष व वैदेहक जाति की स्त्री से उत्पन्न हुई हैं। ये अन्त्यज चमड़े का व्यवसाय करते थे [7]यम व अत्रि ने इसको सात अन्त्यजों में से एक माना है [8]

4. कुशीलव -

कौटिल्य के अर्थशास्त्र में इस अन्त्यज को वैदेहक पुरुष व अम्बष्ठ स्त्री की सन्तान कहा गया है [9]अमर कोष में इसे चारण कहा गया है.

5. वैण :-

मनुस्मृति के अनुसार वैण वैदेहक वर्ण संकर पुरुष एवं अम्बष्ठ वर्ण संकर स्त्री के संसर्ग से उत्पन्न संतति हैं [10]वैखानस धर्मसूत्र व मनुस्मृति के अनुसार वैण वीणा बजाकर अपना जीवन मापन करते है[11]

6. पुल्कस या पोलक्स :-

इस अन्त्यज का सबसे पहले उल्लेख वैदिक साहित्य में आता है. इसका अन्यत्र वर्णन वृहदारण्यक उपनिषद में भी मिलता है, जिसमें चाण्डाल के साथ-साथ इसका उल्लेख मिलता है[12]गौतम इसको शूद्र पुरुष एवं क्षभिय स्त्री की सन्तान मानते हैं।

[13]मनु महाराज ने मनुस्मृति में इसको निषाद पुरुष तथा शुद्र स्त्री से इसको उत्पन्न सन्तान माना है [14]इस तरह पुल्कस नामक अन्त्यज की उत्पत्ति के विषय में मतभेद देखने को मिलते हैं। विष्णु का मानना है कि यह शिकार करके अपनी जीविका चलाते थे, जबकि बैखानस ने इन्हें शराब बनाकर बेचने वाले कहा है[15]मनुस्मृति इनके व्यवसाय के बारे में बताती है कि ये बिल में रहने वाले सर्प नकुल और गोधा आदि को पकडते व मारते हैं [16]

7 कैवर्त -

कैवर्त अन्त्यज के बारे मे मनुस्मृति का मानना है कि ये निषाद पुरुष व अयोग्य स्त्री की सन्तान है। [17]इसी से मनु ने मार्गव व दास भी कहा है। ये नौका वृत्ति के द्वारा अपना जीवन यापन करते थे ।

8 स्वपाक / स्वपच -

बौद्धायन धर्म में दो स्थानो पर इनकी उत्पत्ति का वर्णन आया है। एक स्थान पर बताया गया है कि अम्बष्ठ पुरुष तथा ब्राहाण स्त्री की यह सन्तान है[18]जबकि एक अन्य स्थान पर बताया गया है कि उग्र पुरुष व क्षत्रा स्त्री की यह सन्तान है [19]कौटिल्य की कृति अर्थशास्त्र में उग्र पुरुष तथा क्षत्रा स्त्री से उत्पन्न बताया गया है [20]वैखानस इसको चाण्डाल पुरुष व ब्राहमण स्त्री की सन्तान मानते है. मनु इसको क्षत्रा पुरुष व उग्र नारी से उत्पन्न मानते है[22]मनु के अनुसार चण्डाल तथा स्वपच एक ही प्रकार का व्यवसाय करते थे [23]

9 कुक्कुट -

बौधायन धर्मसूत्र के अनुसार यह पुल्कस पुरुष तथा निषाद स्त्री की सन्तान है।[24] कौटिल्य की कृति अर्थशास्त्र के अनुसार कुक्कुट उग्रपुरुष तथा निषाद स्त्री के संन्सर्ग से उत्पन्न सन्तान है [25] शूद्रकमलाकर में उद्धत आदित्यपुराण के अनुसार कुक्कुट तलवार व अन्य अस्त्र-शस्त्र बनाते हैं. और राजा के मनोरंजन के लिए मुर्गों की लड़ाई का प्रबन्ध करते थे.

आहिण्डक - मनुस्मृति का मानना है कि अहिण्डक निषाद

वर्ण संकर पुरुष और वैदेहक वर्ण संकर स्त्री के संसर्ग से उत्पन्न संतति है[26]

10 सोपाक

:- मनु महाराज के अनुसार सोपाक, चाण्डाल पुरुष व पुल्कस स्त्री के संसर्ग से उत्पन्न संतान है।इनका प्रधान कार्य प्राण दंड प्राप्त अपराधियों का वध करना था [27]

11पाण्डुसोपाक: -

मनुस्मृति के अनुसार चाण्डाल पुरुष व वैदेहक नारी स्त्री की सन्तान है। यह अन्त्यज अपनी आजीविका के लिए बांस पर निर्भर थे। जिनसे विभिन्न बस्तुएं बनायी जाती थी ।[28]

	तालिका		
वर्णसंकर पुरुष	वर्ण संकर स्त्री	उत्पन्न अन्त्यज	व्यवसाय
वैदेहक	अम्बष्ठ	कुशीलव	चारण
वैदेहक	अम्बष्ठ	वैण	संगीत
वैदेहक	निषाद	आन्ध्र	.....
वैदेहक	आयोगव	मैत्रेयक	स्तुतिगान
निषाद	वैदेहक	अहिण्डक	कारागार रक्षक
निषाद	उग्र	पुल्कस	शिकार करना
निषाद	वैदेहक	कारावर(चर्मकार)	चर्म निर्माण
निषाद	आयोगव	कैवर्त	नौकायान
उग्र	निषाद	कुक्कुट	.....
उग्र	क्षत्ता	श्वपाक/ श्वपच	चमड़ा निर्माण
अम्बष्ठ	वैदेहक	वैण	संगीत
क्षत्ता	उग्र	श्वपाक	चर्म निर्माण
चण्डाल	पुल्कस	सोपाक	अपराधियों को दण्ड देना
चण्डाल	वैदेहक	पाण्डुसीपाक	बांस की वस्तुएं बनाना

निष्कर्ष :

उपरोक्त तालिका का अध्ययन करने के उपरान्त हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते है कि वैदेहक वर्ण संकर पुरुषों व वर्ण शंकर स्त्रियों के संसर्ग से उत्पन्न अन्त्यजो की संख्या चार हैं। निषाद वर्ण संकर पुरुषों व वर्णसंकर स्त्रियों के मेल से उत्पन्न अन्त्यजो की संख्या भी चार हैं . उग्र व चाण्डाल वर्णसंकर पुरुषो व वर्णसंकर स्त्रियों के मेल से उत्पन्न अन्त्यजो की सख्या दो दो है. क्षत्ता वर्ण संकर पुरुष एवं अम्बष्ठ वर्ण संकर पुरुष द्वारा वर्णसंकर स्त्रियों से उत्पन्न अन्त्यज जातियों एक एक हैं. इन अन्त्यज जातियों को सामाजिक जीवन में प्रत्येक प्रकार के अधिकारों व संस्कारों से वंचित रखा गया था.

संदर्भ ग्रंथ सूची

1 वामन शिवराम आप्टे, संस्कृत हिन्दी कोष न्यू बुक कारपेरिशन दिल्ली, 2006 पृ० 50

2 हलायुद्धकोष उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ, 1993 पृ० 121

3 भार्गव हिन्दी बाल शब्दकोष, भार्गव प्रकाशन, वाराणासी 2009, पृ० 19

4 ऐतरेय ब्राहण 33/6

5 मनुस्मृति 10/36, मत्स्य पुराण 50 / 76

6 मनुस्मृति 10 / 23

7 वही 10 / 36

8 अत्रि स्मृति 197, लघुयम स्मृति 33

9 अर्थशास्त्र,3 /7

10 मनुस्मृति,10/10

11 वैखानस धर्मसूत्र 3/15/13,मनुस्मृति 10/49

12 वाजसनेयी सहिंता 30/21, वृहदारण्यक उपनिषद,4/3/22

13 गौतम धर्मसूत्र 1/4/17

14 वशिष्ठ धर्मसूत्र 18/5, विष्णु धर्मसूत्र 16/5

15 बौधानयन धर्म सूत्र,1/9/17/13,1/8/16/11

16 मनुस्मृति 10/18

17 वही 10/34

18 बौधायन धर्मसूत्र,1/8/6/9

19 वही 1/9/17/11

20 अर्थशास्त्र 3/7

21 वैखानस धर्मसूत्र 3/15/11

22 मनुस्मृति,10/51

23 वही 10/53

24 अर्थशास्त्र 3/5

25 मनुस्मृति 10/36

26 वही 10/38

27 वही 10/37

28 वही 10/37